Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
April, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
April, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

प्राचीन कला को समेटे हुए हरियाणा के संग्राहलयों का कलात्मक अध्ययन

शोध निर्देषिका :
डॉ सुषमा सिंह
दृश्य कला विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

(शोधार्थी)
ज्योति रानी
दृश्य कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

***Declaration of Author:** I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.*

सारांश

कला हमारे भौतिक तथा मानसिक कल्याण को समृद्ध करने के लिए आवश्यक है। किसी भी देष की संस्कृति, व कला का पता हमें वहां की धरोहर से पता चलता है। संग्रहालय हमारी धरोहर को सहेजने का काम करते हैं। हरियाणा में विभिन्न ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्ध संग्रहालय स्थापित हैं। हरियाणा में स्थित प्राचीन संग्रहालयों में सदियों पुरानी पारम्परिक कला की वस्तुऐं संरक्षित की गई हैं। इन संग्रहालयों में, राज्य के भिन्न भागों से संग्रहीत पुरानी वस्तुएँ रखी गई हैं।

भारतीय इतिहास में हरियाणा का योगदान उल्लेखनीय रहा है। हरियाणा में विभिन्न नस्लों के लोग आए, यहां के तथा भारतीय संस्कृति के निर्माण में योगदान दिया। हरियाणा के कुरुक्षेत्र, तरावड़ी, करनाल और पानीपत के युद्ध के मैदानों पर भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्ध लड़े गए थे। यह धार्मिक विचारधाराओं–हिन्दू, बौद्ध, जैन, सूफी तथा सिख विचारधाराओं की मिलन स्थली रहा है। हड़प्पाइयों तथा आर्यों के बीच कुरुक्षेत्र जनपद के भगवानपुर में खुदाई के दौरान पहली बार हड़प्पा संस्कृति के लोगों तथा सिंधु घाटी सभ्यता के लोग प्रकाश में आई हैं। सिंधु घाटी की सभ्यता में चित्रकला के अनेक नमूने पाए गए हैं। सीसवाल सभ्यता के मिट्टी के पात्रों पर बने डिजाइनों तथा आकृतियों से सिद्ध होता है कि उस काल के लोगों में पेंटिंग के प्रति गहरा लगाव था। हरियाणा में मीटाथाल तथा बनवाली में पाए गए मिट्टी के पात्र, जिनके उपर तस्वीरें तथा आकृतियॉ पेंट की गई हैं, आदिकालीन पेंटिंग का नमूना हैं। वनस्पति का चित्रण भी किया गया है। हरियाणा के ग्राम्य जीवन में प्लास्टिक, पॉटरी या सिरेमिक्स में विशेष रुचि नहीं रखते है वहॉ की महिलाऐं अपने बच्चों के लिये खिलौने के रुप में मिट्टी की गुड़िया, गाड़ी, हाथी–घोड़े, गाय–बैल आदि बनाती हैं तथा नव जीवन के प्रारम्भ की देवी श्सांझी देवीश की मूर्ति अपने धर के चौक की दीवारों पर स्थापित करती हैं। ये मूर्तियॉ मोहनजोदड़ों व हड़प्पा की खुदाई में

मिली मूर्तियों जैसी होती हैं। अन्य कलाओं की भांति मूर्तिकला भी हरियाणा में समृद्ध अवस्था में थी। हरियाणा में मूर्तिकला मौर्यकाल से हर्षवर्धन के शासनकाल तक फलफूल रही थी। लेकिन मुस्लिम आक्रान्ताओं के आगमन से हरियाणा के मूर्तिकला विकास को गहरा आघात लगा था। आज भी पूरे हरियाणा में भारी संख्या में मूर्तियॉ धरती के नीचे दबी पड़ी हैं। हरियाणा में पाई गई

अधिकांश मूर्तियॉ हिन्दू देवताओं की हैं।जो विभिन्न कालों से संबंधित हैं। कुरुक्षेत्र से विष्णु की एक दुर्लभ मूर्ति पाई गई है। हरियाणा से मिली, सृष्टि के पालक विष्णु की शेषशायी मुद्रा की यह सर्वप्रथम मूर्ति है।यह मूर्ति 10–11वीं सदीं से संबंधित है। महेन्द्रगढ़े विष्णु के पंचम अवतार वामन की पीले बलुआ पत्थर की अद्भुत और सुन्दर मूर्ति मिली है। विष्णु के वामन रुप की यह मूर्ति हरियाणा की एकमात्र ज्ञात मूर्ति है। शैली के आधार पर यह मूर्ति 10–11वीं सदी से तथा कला की मथुरा शैली से संबंध रखती है। विष्णु के तृतीय अवतार वराह की मूर्ति, जो पिंजौर के भीमा देवी मंदिर से प्राप्त हुई है तथा 10–11वीं सदी से संबंधित है।

पिंजौर में भीमा देवी मंदिर के भग्नावशेषों से मिली लक्ष्मी–नारायण की अलंकृत प्रतिमा 10–11वीं सदी की मूर्तिकला से संबंधित है। राज्य के विविध स्थानों से अनेकउल्लेखनीय मूर्तियॉ प्राप्त हुई हैं तथा योग नारायण, त्रिमूर्ति, नटराज, शिव, उमा, गणेश, महेश्वर, कार्तिकेय, सूर्य, ब्राह्मिनी, गरुड़, एकनमाशा अग्नि, यम, कुबेर और यक्ष हरियाणा राज्य के विभिन्न संग्रहालय में बडी संख्या में संरक्षित हैं। ये वस्तुएं राज्य के विभिन्न भागों से प्राप्त हुई हैं तथा विभिन्न कालों से संबंधित हैं। हरियाणा सरकार का पुरातत्व एवं इत्यादि। ढ़ स्थित संग्रहालय में बडी संख्या में मूर्तियां, चांदी तथा तांबे के सिक्के संरक्षित हैं। ये वस्तुएं राज्य के विभिन्न भागों से प्राप्त हुई हैं तथा विभिन्न
कालों से संबंधित हैं।

हरियाणा सरकार का पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग 1979से अग्रोहा में पुरातत्वीय खुदाई संलग्न है, अग्रोहा में मिली वस्तुओं से राज्य के सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास पर
आलोक पड़ा है

गुरुकुल झज्जर स्थित हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय राज्य का अन्य योग्य संग्रहालय है। पुरातत्वीय संग्रहालय, गुरुकुल झज्जर नामक यह संग्रहालय 1961 में आर्य समाज द्वारा संस्थापित किया गया था। यहयौधेय तथा कुषाण काल के सिक्कों तथा सांचों के साथ प्रारंभ किया गया था। बाद में खुदाई,अन्वेषणों और विभिन्न स्त्रोतों से प्राचीन सिक्के तथा विभिन्न हिंदू वंशों के सिक्के व सांचे, मनका, हस्तलिपियां, सिंधु घाटी के शास्त्रास्त्र, बरतन, मुस्लिम सिक्कों के सांचे, प्राचीन मूर्तियां, शिलालेख इत्यादि प्राप्त किए गए थे। इनमें से कुछ सिक्के रोहतक जनपद से प्राप्त
हुए हैं इस क्षेत्र को यौधेय साम्राज्य का अंग रहा होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के गांधी भवन में स्थित ग्रामीण प्राचीन संग्रहालय में सदियों पुरानी पारम्परिक ग्रामीण कला की वस्तुऐं संरक्षित की गई हैं। इस संग्रहालय में, राज्य के भिन्न भागों से संग्रहीत पुरानी वस्तुऍं रखी गई हैं। पड़ोसीराज्यों से भी प्राचीन वस्तुएं प्राप्त करने का प्रयास जारी है। यहां संरक्षित वस्तुओं में मटका, पूजा स्टैंड, चिलम, हुक्का, पुस्तक स्टैंड, लोटा, डोलची, चर्खा, दस्ताना, रसोई का सामान, वस्त्र, शया, आभूषण आदि प्रदर्शित किए गए हैं।

करनाल जनपद में नीलोखेड़ी स्थित विज्ञान मंदिर संग्रहालय एक विज्ञान संग्रहालय है, जिसकी स्थापना 1958 को हुई थी। इस संग्रहालय में वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान तथा भू–विज्ञान की वस्तुएं संरक्षित हैं। यहां बडी संख्या में आन्त्र कृमि, मानव भ्रूण, शरीर के भीतरी अंग, पशुओं के विच्छेदित प्रतिमान, विषैले तथा विषहीन सर्प, विभिन्न प्रकार की मछलियां तथा सागर जीव प्रस्तुत
व प्रदर्शित किए गए हैं।

गुड़गांव संग्रहालय में हरियाणा, पंजाब तथा हिमाचल की लोक कलाएं संरक्षित हैं। संग्रहालय में अधिकतर जनजातीय और उपेक्षित कला संग्रहीत है। यह संग्रहालय सेक्टर–4, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव में स्थित है।

कुरुक्षेत्र स्थित श्री कृष्ण संग्रहालय का प्रबंधन कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड सोसाइटी द्वारा किया जाता है। संग्रहालय में भगवान श्रीकृष्ण से संबंधित प्राचीन और आधुनिक वस्तुएं रखी गई हैं। हाल में संग्रहालय के दायरे में महाभारत काल की वस्तुओं तथा उस काल की अन्य प्राचीन वस्तुओं का सम्मिलित किया गया है। इस धार्मिक संग्रहालय को मथुरा, ब्रज, वृन्दावन तथा द्वारिका इत्यादि के अतिरिक्त कुरुक्षेत्र एवं निकटस्थ क्षेत्रों से अनेक वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। साइन्स एक्टिविटी कार्नर द्वारा बाल भवन, बरनाला रोड, सिरसा मेंसिरसा संग्रहालय संचालित है। इस विज्ञान संग्रहालय में प्रमुखतः वैज्ञानिक वस्तुएं, प्रदर्शनी वस्तुएं, पोर्टेबल प्लैनेटोरियम तथा कार्यशील वस्तुएं
संरक्षित हैं।

इतिहास के पन्नो में हरियाणा के ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्ध हिसार का अपना स्थान है। सन् 1354 में तुगलग वेग के सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने हिसार की स्थापना एक दुर्ग के रूप में किया। संयोग से फारसी भाषा में किले का अभिप्रायः हिसार ही होता है। वैसे तो हिसार अपने ऐतिहासिक भवनों के लिए सुप्रसिद्ध है लेकिन यहां का संग्राहलय जहाज कोठी अपने आप में पूरे हरियाणा के साथ–साथ भारत की प्राचीन कला को समेटे हुए है। संग्राहलय में रखी सामग्री हमें अपने इतिहास की कलाओं से अवगत कराती है।

इतिहास की दृष्टि से जहाज कोठी का निर्माण 1796 ई. में आयरलैण्ड के निवासी जार्ज थामस ने 1796 में अपने रहने के लिए करवाया था, जिसे जार्ज कोठी कहा जाता था। जार्ज थामस ने सिरसा से रोहतक तक के क्षेत्र पर अपना शासक स्थापित किया। लेकिन भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का परचम लहरा रहा था। उनकी आंखों में जार्ज के शासक के रूप में स्थापित होना खटक रहा था। कम्पनी ने मराठों के साथ मिलकर जार्ज थामस को निकाल दिया और 22 अगस्त 1802 ई. को बहरामपुर के नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गई। बहरामपुर में उनका मकबरा बना हुआ है।

जार्ज थामस द्वारा बनाई गई कोठी समुद्री जहाज की तरह प्रतीत होती है। कहा जाता है कि एक छोटे से समुद्र के बीच में समुद्री जहाज दिया गया है । क्योंकि कोठी के चारों तरफ पानी था। समय बीतने के साथ–साथ जार्ज कोठी को जहाज कोठी के नाम से जाना जाने लगा। इस ऐतिहासिक कोठी में अब पुराणत्वीक संग्रहालय स्थापित है जो हमें अपनी देष की कला हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और सिंधु कलीन सभ्यता से अवगत करवाता है।

किसी भी देष की संस्कृति, इतिहास व विकास का पता हमें वहां की धरोहर से पता चलता है। हमारी अनमोल धरोहर को सहेजने का काम करते हैं। हमारे समाज के विद्वानों ने संग्रहालय स्थापित कर हमारी संस्कृति से जुड़े पहलुओं को प्रदर्षित करने का अद्भूत प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूची

1. Acharya, Madhava (2008) : “Protected sites and Monuments in Haryana”.
Department of Archacology and Museums, Haryana.
2. A, Madhava (2008) : “Kunal Excavations”, Department of Archaeology and Museums, Haryana.

3. Bahla, L.C and S.C. Gupta : "Couns of India" Kapoori Devi Charitable Trust (Regd.)

4. सैनी, जगदीष (2013) : ''अजाम–ए–मौहब्बत'' राधे कृष्णा आफसैट प्रेस, हिसार।

5ण Shrivastava, R.K (2013) : ''हिसार–ए–फिरोजा'' जिला प्रषासन, हिसार एवं क्षेत्रीय अभिलेखसागर, हिसार मण्डल, हिसार।

6. Vardhan, Vijai : "Rakhighari Rediscovered" A Publication of Department of Archaeology and Museums Government of Haryana.

7. Vardhan Vijai : "The Magnificient Monuments of Narnaul" A Publication of Department of Archaeology and Museums.

8. सैनी, जगदीष : ''इतिहास के झरोखे में'' राधे कृष्णा आफसैट प्रेस, हिसार।

9. भीमा देवी मन्दिर, पिन्जौर एक परिचय, हरकल्याण प्रिन्टिग प्रैस, पंचकूला।

10- Haryana Through the ages Directorate of Archeology and Museums Haryana.